सात सवाल

शिष्य थॉमसन

यन्मांसतो जातं तन्मासं, यदात्मतोजातं तदात्मा

(जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है **यूहन्ना 3:16)**

यदि कोई बात मेरी समझ से बाहर है, तो क्या मैं उसे माया बोलूँ, या कोई स्वप्न कहूँ? पर सच तो यह है, कि हमें ये शब्द इस्तेमाल नहीं करना है, क्योंकि यह स्वप्न नहीं पर एक वास्तविक संसार है, जिसे देखा जा सकता है, और अनुभव किया जा सकता है, और वह है "विश्वास" जिस के द्वारा परमेश्वर हम पर प्रगट करता है हम उन सात सवालों को देखें जो हमारे दिलो दिमाग में आते हैं।

1. ये ब्रह्माँड क्या है? इस ब्रह्मांड के अंदर जीवित और निर्जीव सारी वस्तुऐं आती हैं तत्त्व, ऊर्जा, और जीवित प्राणी और आत्माधारी मनुष्य, ये सब सृष्टि कोई घटना या दुर्घटना का परिणाम नहीं है। बिखरा नहीं पड़ा है। पर यह सब एक नियम में बंधे चल रहे हैं, कोई इसके पीछे नियमों से सब चला रहा है। एक नियंत्रण और शक्ति का केन्द्र है। चाहे हम उसे शारीरिक आँखों से नहीं देख पा रहे हैं। ब्रह्मांड में गेलेक्सी, नक्षत्र और हमारे सोलर सिस्टम के गृहों को और सूरज को देखिये। उनका चलन और समय सिद्ध है। इस ब्रह्मांड का डिजाइनर कोई है? कोई जीवित सर्वशक्तिमान, बुद्धिमान जिसे हम परम ईश्वर पुकारते हैं?

उसने अवश्य अपने आपको प्रगट किया होगा और वह अपनी सृष्टि से संपर्क करता होगा?

2. मनुष्य कौन है? मनुष्य जानवर नहीं है। वह इसलिए कि उसके पास दिमाग है, वह सोच सकता है, उसके पास अच्छे बुरे का विवेक है। और नैतिक मूल्य हैं। वो प्लान करता है याद रखता है, और अलग-अलग तरीकों से अपने आपको व्यक्त करता है वह एक भाषा में सोचता है, बात करता है, पढ़ता और लिखता है, उसका सृष्टिकर्त्ता स्वयं भी इन गुणों को रखता होगा? मनुष्य आविश्कार करता है और जानता है कि उससे ऊपर बड़ा कोई है। हर मनुष्य का एक ना एक धर्म है और वह इस बात का सबूत है कि हर व्यक्ति किसी अदृष्य को, कहीं पर ढूंढ रहा है। मनुष्य बंदर से नहीं निकला है क्योंकि लाखों प्राणियों को आपस में जोड़ने वाले लिंक मौजूद नहीं है और यदि मनुष्य बंदर से निकला है, तो फिर 6000 से अधिक भाषाओं में से कौन सी भाषा बंदर और मनुष्य के बीच में अभी डेवलपमेंट स्टेज में है? मनुष्य के पास स्वभाव और भावनायें हैं। और वह प्रेम चाहता है। वह सृजा गया है। और उसकी उत्पत्ति और इतिहास अवश्य है?

3. बीमारी, वृद्धावस्था और मृत्यु क्यों होती है? शारीरिक जीवन की एक आयु निर्धारित हैं, यह उसका जीवन चक्र है। जन्म लेना, शारीरिक बढ़ती, और फिर व्यस्क जीवन, तब

वृद्धावस्था और फिर मनुष्य के शारीरिक इतिहास की समाप्ति अर्थात् मृत्यु। याद रखना है कि अंत बस शरीर का है। जीवित मनुष्य के दो भाग हैं, एक तो धरती के तत्वों से बना हुआ शरीर, और दूसरा अदृष्य भाग जो आत्मा है। और ये मनुष्य को आत्मिक जीवन देता है। यह आत्मा मिट्टी के बने शरीर को जीवित करता है। जब दोनों भागों का मिलन होता है, तो वह जीवित मनुष्य कहलाता है। जिस दिन आत्मा शरीर को छोड़ देती है। तो शरीर मिट्टी में चला जाता है जिसे हम मृत्यु कहते हैं। और मनुष्य का शारीरिक चक्र समाप्त होता है। और यह प्रक्रिया उसके सृष्टिकर्ता ने निर्धारित की हैं सृष्टि अपने सृष्टिकर्ता के हर रहस्य को नहीं जानती है। तो क्या ये जन्म, जीवन और मृत्यु सृष्टिकर्ता के हाथ में है।? और यह सब उसके नियंत्रण में है?

4. मृत्यु के उस पार क्या है? जब कोई मर जाता है तो लोग शोक विलाप क्यों करते हैं? क्या इसका कारण यही है कि उनके पास आशा नहीं है। और मृत्यु के बाद के बारे में कुछ नहीं जानते हैं? क्या कोई मृत्यु के पार जाकर फिर लौट कर आया है? ताकि हमें आने वाले कल के लिये आशा दे। एक ईष स्वरूप जो मनुष्य रूप धारण करके स्वर्ग से आया हो, और मृत्यु वश होने के बाद फिर जीवित हुआ हो? और यदि ऐसा है तो उसके व्यक्तिगत जीवन और आत्मिक संसार के बारे में उसका बयान क्या विश्वासयोग्य है? जीवन का सबसे बड़ा शत्रु मृत्यु है। बड़े और छोटे सभी इसके शिकार बन जाते हैं। बहुतेरे मनुष्यों की आशा मृत्यु के साथ दफ़न हो जाती है। बड़ा सवाल अब ये है, कि आत्मा जब शरीर को छोड़कर जायेगी तो क्या देखेगी? क्या एक दुष्ट और भयानक वातावरण जहाँ हमेशा के लिये दु:ख और रोना होगा? या स्वर्गलोक जहाँ सृष्टिकर्ता, उसके स्वर्गदूत और पवित्रता, प्रेम और शाँति होगी।

5. मनुष्य के धोखे क्या हैं? मनुष्य असत्य द्वारा बहकाया और भटकाया जाता है।

1. **मनुष्य को ईश्वर समझना:** मनुष्य एक पापी है, और बीमारी पाप और मृत्यु का हारा हुआ है, और स्वयं सृष्टि है क्या परमेश्वर या सृष्टिकर्त्ता की समानता कर सकता है। क्या परमेश्वर के स्थान पर उसकी आराधना की जा सकती है?
2. **निर्जीव वस्तुओं को ईश्वर समझना:** एक निर्जीव वस्तु कभी भी कोई जीवित और बुद्धिमान प्राणी की सृष्टि नहीं कर सकती है। और क्या उसको ईश्वर का स्थान देकर उसकी आराधना हो सकती है?
3. **मनुष्य का दर्शन और सांसारिक गुरू:** मनुष्य का ज्ञान, शिक्षा तक सीमित है, वह आत्मिक संसार और परमईश्वर को प्रगट नहीं कर सकता है। वो जिन्होंने ईश्वर को नहीं देखा है। या आत्मिक संसार में नहीं गये हैं क्या उनकी कल्पनाओं की कोई कीमत है?
4. **विज्ञान:** कई सोचते हैं कि वो ज्ञान जो विज्ञान द्वारा खोजा जाता है वह मनुष्य को नास्तिक बना देता है। पर इसका उल्टा होना चाहिये जब विज्ञान जीवन की गहरी सच्चाईयों की खोज और नये आविष्कार करता है। तो ये महान परमेश्वर सृष्टिकर्ता को हमें जानने को और बाध्य करता है।
5. **शैतान और भूत प्रेतों को ईश्वर समझना:** जादू टोना, तंत्र मंत्र और चमत्कार जो शैतानी ताकत से अनुभव किये जाते हैं, उनका स्त्रोत पवित्र ईश्वर नहीं है। जिस

तरह अच्छा और बुरा इस संसार में है। उसी तरह अच्छा और बुरा आत्मिक संसार में भी है, आत्मिक दुष्टता या भूत प्रेतों द्वारा किये गये काम की पहचान ये है कि इसके द्वारा भय आता है, पैसा, और खून चढ़ावा माँगा जाता है और इस भक्ति के नतीजे में पवित्रता नहीं आती है, पर बुराई और वासना बढ़ती है।

6. **शक्तिः** शक्तिशाली वस्तु ईश्वर का स्वरूप है यह विचार गलत है शक्ति को ईश्वर नहीं समझना चाहिए।
7. **घमंड और स्वयं पर भरोसाः** हमारे भविष्य को परमेश्वर बना सकता है। हम शक्तिहीन हैं। अपने आप से कुछ नहीं कर सकते। अपने आप पर घमण्ड एक धोखा है।

6. सृष्टिकर्त्ता कौन है? क्या सृष्टिकर्त्ता वो नहीं जो शून्य से सृष्टि करने की शक्ति रखता है? तो उसमें जीवन होना चाहिये और जीवन जो निर्जीव को जीवन दे सके? उसके शब्दों में शक्ति होना चाहिये, ताकि वह शून्य में शब्द बोले और सृष्टि करे। ऐसा सृष्टिकर्त्ता जो तत्त्व, ऊर्जा, प्रकाश और जीवन का निर्माण कर सके? एक सृष्टिकर्त्ता जिसके पास जीवन और मृत्यु के अधिकार हों और जो न्याय कर सके जो अपनी सृष्टि की प्रार्थना को सुन सके और उत्तर दे सके।

7. क्या मैं मोक्ष प्राप्त कर सकता हूँ? क्या कोई ऐसा परमेश्वर है, जो हमसे प्रेम करता है? और जो हमारा सर्वनाश नहीं चाहता है? जो हमसे घृणा नहीं करता हो? जो पाप क्षमा करने की शक्ति रखता हो? और जो मोक्ष हमें मुफ्त में दान के रूप में दे सकता हो? क्या मैं मोक्ष खरीद सकता हूँ क्या मैं कर्म द्वारा मोक्ष प्राप्त कर सकता हूँ? और यदि यह संभव नहीं है, तो क्या परमेश्वर यह वरदान के रूप में मुझे दे सकता है? क्या परमेश्वर के पास उपाय है?

जवाब

सारे सवालों का जवाब एक किताब में मिलता है, जिसे बाइबिल कहते हैं। यह परमात्मा की अगुवाई द्वारा लिखी गई है। पर इस पर भरोसा कोई क्यों करे? क्या ये किसी और किताब की तरह नहीं है? इसका उत्तर ये हैं यह मनुष्य के लिये परमेश्वर का संदेश है।

बाइबिल 66 किताबों का ग्रंथ है ये 1500 सालों के दौरान लिखी गई हैं। इसमें ईश्वर, ब्रह्माँड की रचना, मनुष्य की सृष्टि, पाप की समस्या और स्वर्ग प्राप्ति के उपाय इत्यादि के बारे में लिखा है। मोक्ष प्राप्ति का ईश्वरीय उपाय बताया गया है। स्वर्ग और नरक का वास्तविक वर्णन है। इसे 40 से अधिक लेखकों ने लिखा है, प्रारम्भ में परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की और परमेश्वर ने कहा प्रकाश हो और प्रकाश हो गया। उसने भूमि और समुद्र बनाया, पृथ्वी पर वृक्ष और जीवित प्राणियों को जो जल में, थल में, और हवा में उड़ते हैं। फिर उसने ब्रह्मांड में नक्षत्र और सूर्य चंद्र इत्यादि बनाये। फिर परमेश्वर ने पहले मनुष्य आदम की अपने स्वरूप के अनुसार, भूमि की मिट्टी से रचना की और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया।

तो फिर ये जीवन का चक्र क्यों है, जन्म, वृद्धावस्था, बीमारी और मृत्यु, इसका उत्तर ये है, कि हम ये पहचानें की मिट्टी की कीमत नहीं है। और हमें शारीरिक बातों और संसार पर ही ध्यान नहीं देना है। मोक्ष हमारी सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। शरीर का क्षणिक जीवन नहीं पर आत्मा और आत्मिक संसार ज़रूरी है। आत्मिक मोक्ष के लक्ष्य के नीचे इस संसार में हमारा शारीरिक स्वास्थ्य मायने रखता है। और बीमारी स्वस्थ होना बड़ी आवश्यकता है। शारीरिक दुर्बलता हमारे जीवन को कमजोर करती है। एक ऐसा ईश्वर जो प्रार्थना के उत्तर में बीमारी दूर करता हो। वही जीवित है, और मनुष्य से प्रेम करता है। इसी कारण से जब प्रभु यीशु इस संसार में ईश्वरीय स्वरूप बन कर आये तो उन्होंने हर उस बीमार को स्वस्थ किया, जो उनके पास आया।

और आज भी यदि आप प्रभु यीशु का नाम लेकर किसी भी बीमारी से मुक्ति, या भूतप्रेतों से छुटकारे के लिये विश्वास से प्रार्थना करेंगे तो वह हो जायेगा। प्रभु यीशु ने इस संसार में मरे हुओं को भी जीवित किया।

बाइबिल की आखिरी किताब जिसमें भविष्यवाणी है उसमें एक दृश्य का वर्णन इस तरह से है। "मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और एक पुस्तक खोली गई जिसका नाम जीवन की पुस्तक है। उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला वह आग की झील में डाला गया। (प्रकाशित वाक्य 20)

जब शरीर मरण के बाद मिट्टी को मिलता है। तो मनुष्य की आत्मा एक नयी जगह को जाती है। और वह है सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर का न्याय आसन

मोक्ष प्राप्ति का एक मार्ग है।

न्याय के दंड से मुक्ति का रास्ता मेरे न्यायाधीश सृष्टिकर्ता के ही हाथ में है। दंड तो नरक की अग्नि का अनंत दंड है पर परमेश्वर के पुत्र मृत्युदंड स्वयं उठा लेते हैं। प्रभु यीशु, मृत्यु मनुष्य के लिये उठाते हैं। और हर एक जो उनसे याचना करता है। उसके पापदंड को क्षमा करते हैं। और स्वर्गीय आत्मिक मोक्ष प्रदान करते हैं। यह मोक्षमार्ग है। प्रभु यीशु में ईश्वर मनुष्य बने, संसार में रहे, परमेश्वर के मार्ग और सच्चाई को प्रगट किये, इसके उपरांत क्रूस की मृत्यु मनुष्य के बदले सही, इसके द्वारा पाप और शैतान को उन्होंने क्रूस पर हराया, वे तीसरे दिन जीवित हुऐ और तब उन्होंने मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु मृत्यु को और शैतान को हराया, लोगों के देखते देखते वे स्वर्ग की ओर गये आज वे स्वर्ग में विराजमान हैं। और जीवित हैं। और स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल के सारे अधिकार उनके पास है।

आपकी मोक्ष प्रार्थना-प्रभु यीशु, में विश्वास करता/करती हूँ कि आप ईष पुत्र हैं। आपने पवित्र खून बहाकर मृत्युदंड मेरे बदले में किया। आप आज जीवित है। मेरे पापों को क्षमा करें और अपनी आत्मा दें, नया जीवन दें, आमीन्

SHISHYASHRAM
[Registered under Indian Trust Act, 1882 Reg.no-2401]
305 D/A Sheeshmahal, Shalimar Bagh, New Delhi-88 *e-mail:* jawabjawab@yahoo.com

SAAT SAWAL June Hindi-25000